(All smell is disease)
(Accumulation of sewage and refuse scattered in all directions)
You have to grope your way along dark and filthy passages swarming with vermin malodorous gases arising from accumulation of sewage and refuse scattered in all directions.

Attitude is everything
It's non confrontational way of saying "Stop Complaining"
"It is not an admonition, it is a prescription"

"The Best Revenge is to play well"

oil - money, Politics and power in 21st Century
No human casualty but environmental and economic damage. Caused by deepwater spill

Self employment = you must be highly motivated, business ideas should be based on expertise
Not as an accidental entrepreneur.
learning how to run a business is hard enough without also learning a few skill from scratch.
Motivation, drive, passion in entrepreneurship.
** excellent multitasker - marketing, payroll, administrative work taxes, insurance
Long hours to devote,
Selling yourself, buying/hiring someone
Those who prefer
Fixed Structure as salaried employees.
entrepreneurs prefer more fluid work environment.
Sense of belonging, not loneliness, Connect,

Half of all startups fail within first five years.

Doesn't mean failure of person.

Past failure is valuable experience.

most entrepreneurs
Once they taste having more control over their lives, they never go back.

My father's Gift:

"If man has been able to create the arts, the sciences and the material civilization, why should he be judged powerless to create justice, fraternity and peace"!

जयपुर रियासत के प्रमुख ताजीमी ठिकाने (महार) के प्रतिष्ठित
कामदार व प्रगतिशील किसान श्री लालजी –
इष्टदेवता वीर हनुमानजी"
आज भी बच्चों के बाल वहीं चढ़ते हैं। उनका स्वयं का
मकान व पुरानों की दतारियां उनकी प्रतिष्ठा व वैभव
द्योतक है।
किसानों के प्रति ठिकाने (जागीरदार) के दृष्टिकोण व
व्यवहार से रुष्ट महार छोड़ दिया। जमीनें गरीब
किसानों में बांट दी। परिवार सहित आमेर चले
आये। राजपरिवार के सम्पर्क में आये। छोटी जागीर
व पीली की तलाई के निकट जमीन मिली। एक
बड़ा कुआ (कोठी) बनवाया जो आज भी उक्त क्षेत्र में लाल
की कोठी' के नाम से विख्यात है। राजपरिवार के व्यवसाई
जाते थे। लालजी के सुपुत्र माधोलालजी धाबाई ने जयपुर
शहर की प्रमुख चौकड़ी ~~कर्म~~ तोपखाना देश में मिश्रा-
राजाजी के रास्ते में दो मकानों की जमीन ली। एक में
मकान बनाया दूसरा अस्तबल, गायों को रखने के लिए व
कुश्ती के मैदान के लिए। माधोलालजी धाबाई
महाराजा माधोसिंह का साफा बांधने (turban
का अत्यन्त निकट रहकर काम करते थे। राजपरिवार के
जागीरदार व हाकिमों के सम्पर्क में आने के कारण
खान-पान, रहन सहन ठाट बाट का था। उनके
दो लड़के थे।
बड़े लड़के हनुमान बक्श को उन्होंने जयपुर
की राजभाषा उर्दू, फारसी, अरबी की उच्चतम

शिक्षा दी। उन्हें जयपुर राज्य की अदालतों में
वकालत करने का परवाना मिला व वे वकील
साहब के नाम से जाने जाने लगे। बिरजिश का
शेरवानी, बाप से सीखा सुन्दर साफा, जयपुरी
जूतियां, हाथ में बेंत में जग में पहिचान।
हम लोगों का मकान सेठ साहूकार, खण्डेलवाल
जैन, टिक्कीवालों का मोहल्ला था, उनसे
निकट का सम्बन्ध परन्तु क्षेत्र में रहनेवाले
अन्य दस्तकार, कामगार, छोटे दुकानदार
अल्प संख्यक, पिछड़ा वर्ग के स्नेह व विश्वासपात्र।
ऊँच विचार, संवेदनशीलता, सच्चाई,
ईमानदारी मिलनसारिता का जवाब नहीं।
सभी के स्नेह भाजन।

हनुमान जी के परमभक्त, प्रतिदिन अदालत
से आने के बाद शहर के बालाजी के यहां संध्या
को दीपक जलाने जाना। धार्मिक कार्यक्रमों में
भाग लेना, घुड़सवारी, पतंगबाजी व गोठ आयोजनों
को शौक। छुट्टी को पड़ौसी मित्रों के साथ
चौपड़, सतरंज व ताश खेलना। स्वादिष्ट खाने के
शौकीन। रिश्वतखोरों से घृणा व दूरी ~~रखना~~

सन् 1935 के आसपास जब लोग शिक्षा का
महत्व नहीं समझते थे, हनुमान बक्षजी ने शिक्षा के
महत्व को समझा। अपने सभी मित्र, रिश्तेदार,
सम्पर्क में आये व्यक्ति को अपने लड़के लड़कियों
को पढ़ाने को समझाया, मजबूर किया।

उस जमाने में जब उच्च व धनिक परिवा

के लोग भी लडकियों को शिक्षित करने, स्कूल भेजने से
कतराते थे। उन्होंने अपनी तीनों लडकियों को स्कूल भेजा,
विवाह होने तक शिक्षा दी। बाल-विवाह, मृत्युभोज के
खिलाफ थे। स्वाभिमान से रहने की प्रेरणा देते थे।
जयपुर के पुराने समाज के प्रतिष्ठित परिवार, उनके
बच्चे पढ़े व सभी हमारे रिश्तेदार थे। इंजीनियर,
डाक्टर, वकील, सरकारी सेवाओं में उच्चपदों पर
पंहुचे। वे मीटिंगों में भाषण पर विश्वास नहीं करते थे
सभी रिश्तेदारों, परिचितों व सम्पर्क में आने वालों
अपने प्रभाव का उपयोग कर लडके-लडकियों को पढाने
को मजबूर करते थे।

उनके छोटे भाई नाथूलाल थाभाई जयपुर के प्रमुख
पहलवान व राजपरिवार से निशान प्राप्त जौहरी थे।
उनके छोटे भाई यानि मेरे चाचा चांदी के जेवर बनाने
का (विशेषकर घुंघरू बनाने) कार्य बडे पैमाने पर करते
मेरे पिताजी की प्रथम शादी केसरी निवास,
त्रिपोलिया बाजार के प्रतिष्ठ ठिकाने में हुई थी. उससे
उनकी कीर्ती व प्रतिष्ठा में और भी वृद्धि हुई। प्रथम
पत्नि के देहावसान के पश्चात उनकी दूसरी शादी
गोविन्ददेव जी के परम भक्त "भगतजी" बोदीलालजी
की सुपुत्रि (मेरी माताजी) के साथ हुई। उनपर
पिता का असर ऐसा था और वे अत्यन्त धार्मिक,
~~महिला~~ रहन सहन व विचारों की महिला के रूप में
पहिचाने जाने लगी। भगतजी बोदी लालजी
भगवान गोविन्ददेव जी के भजन-कीर्तन, विशेषकर

सायंकालीन भजन, श्रृंगार आरती गाते थे। बंगाली में भगवान कृष्ण की ~~आरती~~ व आरती व कीर्तन का कोई सानी नहीं था।

उनके दो लड़के राधाकृष्ण व मोहनलाल पुरानी बस्ती के प्रसिद्ध व प्रतिष्ठित महानुभाव बने। राधाकृष्णजी सचिवालय सेवा के अलावा अन्य व्यवसाय भी करते थे जिनमें टेलरिंग व भगवान गोविन्ददेवजी के फूल बंगला व फूलों की झांकी में दक्ष थे। मोहनलालजी सेवा पहले जयपुर रेलवे में स्टेशन मास्टर व बने बाद में जयपुर स्टेट बैंक में प्रबन्धक।

हनुमान बक्शजी के बड़े लड़के यानि मेरे ज्येष्ठ भ्राता राधामोहनलाल जिनको पूरा नगर विद्यार्थी जीवन से ही वकील साहब कहकर सम्बोधित करता था के बारे में जितना कहा जाय व लिखा जाय कम होगा।

विद्यार्थी जीवन में विद्यार्थी संगठनों के पदाधिकारी, सामाजिक संगठनों व सांस्कृतिक संस्थाओं के अगुवा, स्वतन्त्रता संग्राम के सिपाही रहे। पिताजी ने उन्हें एल.एल.बी. कर वकालत करने की ठान ली थी।

शिक्षाकाल में गतिविधियों, खेलकूद, सांस्कृतिक, छात्र संगठनों की व्यस्तता के कारण वे परीक्षा में कई बार अनुत्तीर्ण हुए परन्तु हनुमान बक्शजी ने उनका पीछा

नहीं छोड़ा और उन्हें बी.ए., एल.एल.बी. करा कर ही छो

कालेज के दिनों में स्वतन्त्रता आन्दोलन व अन्य गतिविधियों से दूर रखने के लिए पिताजी ने महाराजा मानसिंहजी से अनुरोध कर दादाजी (मा की पगड़ी राधामोहनजी के बंधवा दी। राधामोहन को कालेज समय के पश्चात सिटी पैलेस या रामबाग में घन्टों के लिए उपस्थित होना पड़ था। न तो मानसिंह जी साफा बांधते थे, न भाई साहब (राधामोहनजी) को साफा बांधना आता था। मानसिंहजी अधिकांश समय विदेशों में रहते थे।

एक बार अचानक रामबाग में मानसिंह जी घूमते हुए आ गये, राधामोहनजी युवा थे, किताब पढ़ रहे थे। महाराजा ने पूछा क्या पढ़ रहे हो, जब उ विषय की किताब दिखाई तो उन्होंने कहा कॉ में भी पढ़ते हो, अच्छा उनकी ड्यूटी तीन घन्टे कर उनके बोलचाल व्यवहार से प्रसन्न होकर उनकी तनख्वाह दुगनी यानि 16 रुपये 14 आने के बजा 33 रुपये 12 आने कर दी।

कुछ दिन बाद महाराजा कालेज मैदान पर हाकी टूर्नामेंट का पारितोषिक वितरण करने पधारे। उन दिनों महाराजा कालेज मैदान पर जयपुर मेडीकल कालेज व स्टेट के अन्य कालेज के विद्यार्थियों के बीच कड़े संघर्ष के साथ मैच हुआ करते थे। महाराजा कालेज क टीम विजयी हुई थी। राधामोहनजी उस टी के सदस्य थे। महाराजा ने जब उन्हें

प्रिंसिपल को कहा कि अच्छा हॉकी भी खेलते हो और तत्कालीन स्पेशल एज्यूकेशन आफीसर जे.सी. रोलो (जिनके नाम का आज भी कालेज प्रांगण में अध्यापकों का कक्ष है) ने उनकी अभिरुचि व हॉकी खेल की गतिविधियों में भाग लेने के बारे में बताया तो महाराजा मानसिंह अत्यन्त प्रसन्न हुए। दूसरे दिन रामबाबा को बुलाया और कहा तुम्हें केवल उपस्थित होकर हस्ताक्षर कर चले जाना है, पढ़ाई करो खेलो, उन्होंने उनकी तनख्वाह बढ़ाकर 85 रुपये 15 आना करने का आदेश भी दिया।

महाराजा मानसिंह जब ब्रिटेन में एक हवाई दुर्घटना में बाल-बाल बचे तब गोविन्ददेवजी के मंदिर में प्रार्थना सभा हुई। उस सभा में अन्य सभी गणमान्य महानुभावों व प्रतिष्ठित नागरिकों ने ईश्वर से महाराजा की लम्बी आयु की कामना की तो राधामोहनजी ने एक युवा नेता के रूप में भाषण दिया। कहा "ईश्वर ने महाराजा को इसीलिए और अधिक उच्चतम स्थान देने को जीवनदान दिया है और यह सुनिश्चित है कि महाराजा का सम्मान व कीर्ति यश व प्रतिष्ठा बढ़ेगी तो महाराजा ने निकट बुलाकर पीठ थपथपाई। जयपुर के विलीनीकरण के पश्चात महाराजा मानसिंह राजप्रमुख बने और उनकी दूरदर्शिता के कारण जयपुर राजधानी बना।

विद्यार्थी जीवन में ही हिम्मत इतनी थी कि बाद में सामान्य व संगठन निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में आमेर व चौमूं से विधान सभा का चुनाव लड़े। राधामोहनजी ने अछूतोद्धार के में लिए छुआछूत मिटाने के लिए बहुत कुछ कार्य किया, नगरपालिका कर्मचारी संघ के अध्यक्ष के रूप में और तत्पश्चात इन्टक की जयपुर में स्थापना कर उसे मजबूत करने में अपनी संगठन क्षमता का परिचय दिया। सफाई कर्मियों को उन्होंने रेस्टोरेन्ट के लिए दुकानें दीं। पांच बार पार्षद रहने के पश्चात वे नगरपरिषद के अध्यक्ष चुने गये और जबतक नगरपरिषद को सरकार ने राजनीतिक कारणों से भंग नहीं कर दिया उसके अध्यक्ष रहे।

इनके कार्यकाल [लगभग] को आम गरीब लोग आज भी याद करते हैं। उनकी लोकप्रियता का नमूना यह था कि विद्यार्थी जीवन में वकील के नाम से मशहूर विद्यार्थी नेता, जो कई बार [महाराजा कॉलेज] छात्र संगठन, लॉ कॉलेज छात्र संघ के पदाधिकारी रहे, पूरे नगर में चेयरमैन साहब के नाम से जीवन पर्यन्त सम्बोधित किये जाते रहे। उनकी लोकप्रियता का नमूना यह था कि जाति का एक भी वोट नहीं होने के बावजूद वैश्य बाहुल्य क्षेत्र में उन्होंने भाजपा के वरिष्ठ नेता रामदास अग्रवाल को पराजित किया।

राधामोहनजी अपने छात्र जीवन के साथी पूर्व उपराष्ट्रपति भैरोंसिंह शेखावत, किसान नेता चौधरी कुम्भाराम आर्य, नाथूराम मिर्धा, सरदार हरलालसिंह,

छात्रजीवन से ही परिषद ने उनके समाज में एक बदलाव आया, जो समाज को दिशा देने वाली जाति थे। उनमें से चौमू व आमेर का प्रत्याशी चुने गये। जयपुर में भी उसका प्रभाव रहा।

के निकटतम व विश्वसनीय साथी रहे।
समस्त नगर जानता था कि राधामोहन जी कुम्भारामजी के खास व निकट के साथी हैं और इसीलिए उन्हें श्री मोहनलाल सुखाड़िया का स्नेह व विश्वास प्राप्त नहीं हुआ। अनेक वर्षों तक वे ~~कांग्रेस~~ के जयपुर जिला कांग्रेस के महामंत्री रहे।

राधामोहन जी ने जनार्दन सिंह गहलोत को जब कांग्रेस टिकट दिया गया तो कांग्रेस छोड़कर महारानी गायत्री देवी के साथ स्वतंत्र पार्टी में आये। किशनपोल से विधान सभा का चुनाव लड़ा, परन्तु राजमाता व भैरोंसिंह जी शेखावत की लड़ाई में त्रिकोणीय संघर्ष में सफल नहीं हुए। श्री भैरोंसिंह शेखावत व श्री भंवरलाल शर्मा भी पराजित हुए।

कुछ लोग कहते हैं और डींगें मारते हैं हमने भैरोंसिंह जी, राधामोहन जी, भंवरलाल जी को हराया परन्तु सच्चाई यह है कि ये लोग स्वतंत्र पार्टी व जनसंघ की आपसी लड़ाई के कारण हारे थे।

भैरोंसिंह जी के साथ राधामोहन जी ने जनता पार्टी ज्वाइन की। उनके साथ प्रान्त भर में दौरे किये, जिला जयपुर को संगठन स्थापित करने में योगदान दिया। स्वर्गीय कल्याण सिंह कालवी तो उन्हें गुरु जी कहकर सम्बोधित करते थे।

जनता दल की आपसी खींचतान व गुटबाजी, जातिवाद के चलते उन्हें आमेर से टिकट नहीं मिला।

जनता पार्टी से लोकदल बना, लोकदल से जनता दल और उसमें चिमनी ग्रुप, दिग्विजयसिंह ग्रुप बने। राधामोहनजी को हेमवतीनन्दन बहुगुणा का आशीर्वाद और प्रश्रय था परन्तु उनके ग्रुप का राजस्थान में प्रभाव नहीं बना। प्रत्येक बार बहुगुणाजी राधामोहनजी के पुराने घर पर आये व उनकी सादगी, ईमानदारी व कर्मठता से प्रभावित थे।

हनुमानबक्शजी के बारे में लिखित रूप में राधामोहनजी की तरफ चला गया।

हनुमानबक्शजी का नगर के प्रमुख वकीलों व घरानों से निकट का सम्पर्क था जिनमें श्री दौलतमल भण्डारी, रामकिशोर व्यास, चिरंजीलाल अग्रवाल, रमेश स्वामी, केवललाल बाफना, श्यामबिहारी सक्सेना, गुलाबचन्द कासलीवाल, राजमल टांक, गजानन्द मुनी, बाबा हरिश्चन्द्र, राधाकृष्ण रस्तोगी* प्रमुख थे। ये लोग पुराने कोई फाइलें, कागजी दस्तावेजात आदि के अध्ययन व उनमें उपयोग किये गये शब्दों व वाक्यों के कानूनी पहलुओं पर चर्चा करते थे। पारिवारिक सम्बन्धों का लाभ राधामोहनजी को मिला।

*रायबहादुर लक्ष्मीनारायण यादव आदि

हनुमानबक्शजी जीवन में सादा जीवन उच्च विचार, ईमानदारी, सहृदयता के प्रतीक थे। सन्तोषी स्वभाव के थे। जागीरदारी जागीरी समाप्त होने पर [illegible] लालजी की कोठी के बीच [illegible] जमीन के काश्तकार [illegible] कहते थे उनके पास आये और कहा जमीन के अनुबन्ध से

ले लें जमीन उनके नाम करा दें। हनुमानबक्सजी
का जवाब था जिस जमीन को मेरे बाप ने मुझे दान
को दिया है मैं उसके पैसे नहीं लूंगा और जमीन उनके
नाम करने को लिख दिया। मौत समय तक वे उपकृत
हो फसल को उन्हें अनाज आदि भिजवाते थे। जब
हाईवे बना तो कुछ जमीन हाईवे अथोरिटी को
ने एक्वायर की। मेरे बड़े जीजा जगन्नाथ चन्देल उस समय
ग्रामीण में तहसीलदार थे उन्होंने बहुत कहा कि एक
मुआवजा आप ले परन्तु हनुमानबक्सजी ने लेने से
इन्कार कर दिया।

राधामोहनजी ने जिन्दगीभर रिश्वत नहीं कोई
दुरुपयोग नहीं किया कोई
अपने पद का लाभ नहीं लिया। जयनारायण व्यास
जी के साथ निकटता के कारण श्री रामकरण जोशी
से उनके अच्छे सम्बन्ध थे, श्री जोशी ने 21-गज के
हिसाब से 2000 गज के दो प्लाट एक राधामोहनजी के
विश्वविद्यालय के पास
मंत्री (आयुर्वेद) थे
नाम व एक हनुमानबक्सजी के नाम आवंटित किये परन्तु
राधामोहनजी ने धन्यवाद के साथ लौटा दिया
और कहा दुनिया कहेगी राधामोहन ने मिनिस्टर
पद का लाभ उठा लिया। आज भी उनका पट्टा
मेरे पास पड़ा है। उन्होंने बहुत कहने पर भी
जमीन का आवंटन स्वीकार नहीं किया।

चौधरी कुम्भाराम आर्य जब राजस्वमंत्री बने तो
जयपुर ग्रामीण-दिल्ली हाईवे पर रामगढ़ मोड़ के पास बीघा
जमीन उन्हें आवंटित की। परन्तु राधामोहनजी ने उसे लेने
से इंकार कर दिया और कहा कि लोग कहेंगे कुम्भाराम
के साथ का फायदा उठा लिया। मैं नाम में जाति

प्यारा (ए) मैं जिन्दा नहीं हूँ प्रभु के स्वंय के गाँव पर बसा हूँ
कृपया मुझे क्षमा करें। मैं परेशान से कुशल हूँ। और
जीवन काढ़ी ली और। तदुपरान्त कुमारी (मैत्री) ने बहुमूल्य
एक पत्रिका (महोदय को दी)।

उनके जमाने पर राजनीति व लोकसेवा में उनकी प्रतिष्ठा थी जो ईमानदारी से सादा जीवन व्यतीत करते थे। उन्होंने जयपुर में रामकृष्ण जयन्ती शोभायात्रायें प्रारम्भ की। गलता तीर्थ के जीर्णोद्धार के लिए सक्रिय प्रयास किया। सफाई कर्मियों के मोहल्लों में स्कूल व विद्यालय बिड़ला चैरीटेबिल ट्रस्ट के माध्यम से खुलवाये। संवेदनशील ऐसे कि किसी गरीब व्यक्ति को किसी काम के लिए, कुछ भी लिख कर देने के लिए व उसकी मदद के लिए जवाब (इंकार) नहीं किया।

वे सदैव रिक्शा में चलते थे अथवा किसी गोविन्द जैसे मित्र विशेषकर श्री रामरतन कोकाजी की गाड़ी में जाते थे। शादी विवाह व अन्य संस्था में समय अथवा किसी भी काम का प्रबन्ध निभाते थे।

जयपुर की ऐतिहासिकता, ऐतिहासिक स्थल, नगर नियोजन को बचाये रखने के लिए उन्होंने बहुत कुछ किया। मिर्जा इस्माइल रोड पर बरामदे कवर नहीं करने दिये। नीरज होटल के निर्माण को तोड़ा, गलियों में पैदल निकल जाया करते थे, नित्यप्रति सिटी का राउन्ड करते थे।

नगर परिषद में उस समय जयपुर के धाकड़ राजनैतिक पार्षद होते थे जिनमें श्री गिरधारीलाल भार्गव, भंवरलाल शर्मा, श्री रमेश मोदी वाला, जनार्दनसिंह गहलोत, शाहइकरामुद्दीन, रामपाल मुंशी, हकीम इब्राहिम खां, और राजनीति में

कमलनारायण पाण्डे, मंगलाल सोमानिया, शांतिभाई
दुलारी, राधेश्याम शर्मा, मास्टर रामशरण [illegible] कुमारी
मोहनलाल आज़ाद, आचार्य कपिलदेव, हरिदेव
शास्त्री, प्रकाशचन्द जैन, आदि आदि व अन्य
राजस्थान के राजनीतिज्ञ जैसे नेता मोहनलाल सुखाड़िया, हीरालाल शास्त्री,
कुम्भाराम आर्य, मास्टर हरलालसिंह, रामकिशोर
व्यास, दौलतमल भण्डारी, रामचन्द्र कासलीवाल,
श्री हजारीलाल शर्मा, रामकरण जोशी, देवीशंकर तिवाड़ी,
दामोदर व्यास, आदि।
विरोध पक्ष विकसित भया और उनमें [illegible]
राधामोहनजी जैसे लाल, [illegible], रचनात्मक
राजनीतिज्ञों का [illegible] आखिर में आजाद प्रत्याशी
श्री [illegible] माथुर से भी उन्हें निराशा [illegible]
लगी जिन्होंने उन्हें अचानक से पार्टी हित में [illegible]
का राजस्थान से मुँह मोड़ लिया। इस घटना ने
राधामोहनजी को तोड़ कर रख दिया।
परन्तु उनके द्वारा जयपुर के हित में लम्बी
लड़ाई जयपुर की वर्तमान पीढ़ी के लोगों को
विशेषकर पुरानी बस्ती, ब्रह्मपुरी, [illegible] के लोगों
को व गोविन्द [illegible] स्थानीय राजनीतिज्ञों
ने चौगान के ऐतिहासिक ग्राउंड का [illegible]
कर दिया। [illegible] व उनके आसपास के [illegible]
[illegible] पुनः [illegible] स्थानीय [illegible]
[illegible] किया। [illegible] व पुनः [illegible]
को [illegible] कानूनी प्रक्रिया [illegible]
कर गोविन्द [illegible] को [illegible]

भी बन्द कर दिया। राधामोहनजी ने अपने मित्र सुराज
यादव के साथ संपर्क किया और एस.बी. भाई एल. राम
उच्चन्यायालय में दायर कर दी। राजस्थान हाईकोर्ट में
उस समय एक सदस्य के पास मुकदमा प्रस्तुत हुआ।
संघ को उसे सुनने से इन्कार कर देना चाहिए।

राधामोहनजी ने अनुरोध किया कि कृपया उस
नहीं सुने व अन्य बेंच को स्थानांतरित करदें परन्तु
उन्होंने अदालत की मानहानि का केस उनपर
लगा दिया। हाईकोर्ट की डबल बेंच राधामोहनजी
की सज्जनता व निश्छलता से परिचित थी परन्तु उन
वकील को प्रताड़ित करना चाहती थी। राधामोहनजी
से कहा गया कि वे क्षमा मांगले परन्तु उन्होंने मित्रवत
को अकेले छोड़ना उपयुक्त नहीं समझा व चुप रहे।
राजस्थान हाई कोर्ट के न्यायमूर्तियों ने सांयकाल उनको
एक माह की सजा सुनाकर बाहर पधार गये। पुलिस ने उन्हें
गोविन्ददेवजी के मंदिर से घर लौटते गिरफ्तार कर
लिया। गिरफ्तारी दिलाकर कहा था चले जायें कल
पूजाये परन्तु उन्होंने इन्कार कर दिया। अगले दिन
उनके साथियों व बार के सदस्यों को मालूम हुआ।
जयपुर में रह रहे प्रशासनिक जज को एक प्रोग्राम में
आये थे। छुट्टी के दिन उनकी विशेष अदालत
बैठी और उसने सुनवाई कर उन्हें जेल से रिहा कि
एक दस दिन जेल में पूरी शालीनता से रहे।

जिन न्यायाधीशों ने उन्हें सजा सुनाई थी उन्
पुनः सुनवाई की दरख्वास्त को कानूनी मुद्दे पर रखा जा

एक मामले की सुप्रीमकोर्ट में अपील की मोहलत दी/
सुप्रीमकोर्ट में जब उनके मित्र वकील जगदीप
धनकड़ ने अदालत को बताया कि मेरे मुवक्किल ने
केवल दूसरी बेंच को केस स्थानान्तरित
करने की दरख्वास्त की है और कोई अदालत पर
लांछन नहीं लगाया और तो मुझे याद है उच्चतम
न्यायालय के न्यायाधीश ने उनकी आयु देखते
हुए कहा था इसीलिए तो सजा सुनाई गई है
और सजा को मुलतवी कर दिया/
बीमारी के कारण वे अदालत में फिर
उपस्थित नहीं हो सके/
राजी बीमारी में जब सवाई मानसिंह
अस्पताल में थे मुख्यमंत्री अशोक गहलोत उनके
पास मिलने गए तब राधामोहनजी ने उन्हें
आशीर्वाद देते हुए कहा था जनता का ध्यान
रखो, जो कुछ तुम कर रहे हो उसे आगे बढ़ाओ
तुम्हारा भविष्य उज्ज्वल है व तुम्हारी कीर्ति
लगातार बढ़ेगी। हमें तुम्हारे पर गर्व है/
मुख्यमंत्री लम्बे समय तक उनके पास रहे
स्वास्थ्य के अलावा अनेक महत्वपूर्ण विषय
विशेषकर जनयुग के सम्बन्ध में चर्चा की/ मुख्यमंत्री
ने कहा था आप जैसे लोगों ने आम आदमी को आगे
आने का हौसला पैदा किया हुआ है आप से जनयुग के
व्यवस्था वाले पिछड़े लोग उस आगे नहीं बढ़ सके/
राधामोहनजी ने रूढ़िवाद से अपनी बड़ी
लाडली का पुनर्विवाह कर प्रचलित अन्तर्जातीय विवाह
किया। वे प्रगतिशील विचारधारा के महान व्यक्ति थे/

मुझे भाव विह्वल
मुझ पर अपना विश्वास
के साथ
मुझ ना सकूँ
समझाने लगते
कि मुझे
बच्चों से कहते
मेरे लड़कों,
इसका कहना
मानना मेरी जगह
इसे समझना।

मुझे वे सदैव ऐसे हमारी जीवन की बातें कभी सुनाते थे। मुझे
मुझे याद है बीमारी के दिनों में एक दिन मुझसे वे बोले
सत्यनारायण मैंने क्या गलती की है तू बता, मुझे
मेरे एक लड़के ने आज यह कहा मैंने उनके लिए
क्या किया। कोई जमीन, कोई मकान कोई धनदौलत
कुछ भी तो छोड़ा नहीं किया। मैंने कहा
नादान है। वे आज जयपुर में सा उहोदे
चलते हैं यह किसके बूते पर। उनकी
पहिचान आपके द्वारा होती है आपकी
और हमारी पहिचान उनके द्वारा नहीं होती।
लोग कहते हैं यह शयामा हनजी, बचपन में
साथ खेलकर लड़का है, उसका पोता आई है। कोई
नहीं कहता सत्यनारायण हलवाई का बा[illegible]
नाई शयामा हनजी है। यह क्या का[illegible]
और उनकी आँखों में एक खुशी दौड़ा[illegible]
और यह निकले। कहकर मेरी मा[illegible]
समान भाभी जिसने बचपन में मेरी बहु[illegible]
सेवा की है मुझसे कहती ही हैं लालजी कै[illegible]
हो, बहु कैसी है" कह उठती थी। दोनों [illegible]
अपनी मृत्यु के अवसर पर खाली हाथ गए
जिसने हमें दिया कहा देपा मैंने साहब[illegible]
नहीं रहे। मुझे आज तक ऐसा कोई व्या[illegible]
नहीं मिला जिसने उन्हें बुरा कहा हो
केवल यही कहा जयपुर का नेता हो तो
शयामा हनजी जैसा।

मेरे लघुभ्राता नारायणसिंह भी पूर्ण स्वाभिमानी व्यक्ति हैं। अपने जीवन में कर्मठ व प्रबुद्ध पत्रकार रहे। राष्ट्रपति शासन लगाये जाने के दौरान जयपुर में त्रिपोलिया बाजार में हुए गोलीकाण्ड व की जांच आयोग के समक्ष क्रमशः जयपुर के प्रमुख दैनिक राष्ट्रदूत के प्रधान नगर संवाददाता।

विद्यार्थी जीवन में लगातार लॉ कालेज के विश्वविद्यालय अध्यक्ष, नगर के प्रमुख क्रिमिनल लॉ के वकील, 17 वर्ष लॉ कालेज विश्व विद्यालय में अंशकालिक व्याख्याता।

जनता पार्टी के शासन में जब कांग्रेस विरोध में थी तब अनेक वर्षों तक जिला कांग्रेस के महामंत्री, नगर विकास न्यास के सदस्य। श्रीमति इंदिरा गांधी की गिरफ्तारी पर जयपुर में ऐतिहासिक विरोध रैली व जुलूस के संयोजक/आयोजक।

भावुक स्वभाव के नारायणसिंह जो वर्तमान के विधायकों के अग्रणी रहे हैं ने राजनीति छोड़ दी। सबकुछ कुर्बान करने, अथक मेहनत करने के बावजूद, पूर्ण निष्ठा, ईमानदारी व वफादारी के बावजूद जब स्वाभिमानवश उनका टिकट काट दिया गया और चर्चा के दौरान उन्हें कहा गया कि स्टेटस (धन, सम्पदा, [illegible], जाति, रिश्तेदारी, गॉडफादर आदि) भी आवश्यक है तो उन्होंने एकदम बड़े नेता का कमरा छोड़ दिया और उसके बाद यह कहते हुए 'नेतागिरी' छोड़ दी कि अब यह 'Game of scoundrels' रह गई है।

मुझे मालूम हुआ तो दुःख हुआ और उन बड़े नेता के पास
गया और नारायण सिंह के बारे में बात छेड़ी। उन्होंने
पुनः वही रटा रटाया जवाब दिया तो मैंने कहा जिन
लोगों को आप टिकट ला रहे हैं और जो शक्तियाँ
पूरी तरह हारेंगे क्या उनका स्टेटस, कार्य, कुर्बानी,
ईमानदारी, विश्वास देखी गई है। कांग्रेस जनपद
में साफ हो जायेगी और इसका असर नेताओं पर
भी पड़ेगा। और यही हुआ भी जिन्हें टिकट दिये
गये थे वे सभी हारे, कांग्रेस का सफाया हो गया
और स्वयं नेताजी का भी असर उन पर इसका
असर नहीं पड़ा।

हमारे परिवार में सभी ने तरक्की की - समाज को गौरवान्वित किया

तीन बहिनें:- रामप्यारी बाई W/o श्री जगन्नाथ चन्देल RAS
हरप्यारी बाई W/o स्वतंत्रता सेनानी श्री बाबूलाल जी सैनी Supdt Custom
सुशीला W/o श्री राजेन्द्र सिंह चौहान सुपरिन्टेन्डेन्ट जेल

भतीजे = श्री ओमप्रकाश सैनी RPS.
" गोविन्द प्रकाश एडवोकेट
" वेदप्रकाश एडवोकेट
" मंजुलप्रकाश एडवोकेट

भतीजी - शशिबाला - प्राध्यापक सहकारिता
मंजू - प्रधान, पंचायत समिति शाहपुरा.

पुत्र व पुत्रवधु डा. रिपुदमन सिंह Ph.D.
डा. पुनीता सिंह Ph.D.
डा. पारिक्षित सिंह M.D. (USA)
डा. मारिया सिंह M.D (USA)

तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक व राजनीतिक
स्थितियों का मैंने निकट से देखा है हालांकि पारिवारिक
पृष्ठभूमि, दादाजी पिताजी व बड़े भाई की प्रतिष्ठा, सक्षमता,
सम्पन्नता, व्यक्तित्व व सामाजिक प्रभाव के चलते भोगना
नहीं पड़ा।

7 छुआछूत व ऊंचनीच का बोलबाला था। दलित व
सफाई कर्मी जूठन व प्रतिदिन दिये जाने वाले भोज्य पदार्थ
आदि पर आश्रित थे। उनके मोहल्ले, बस्तियां व रहन सहन नारकीय
था। बाजार में चलते तो मार्ग परची व निशान के साथ घरों में
सफाई व तहारतों की सफाई के बाद जहां जहां से गुजरते पानी
का छिड़काव, बगैर किसी सावधानी व सुरक्षा के मल मूत्र
नालियों, कचरा गाड़ी, गलियों की सफाई व गन्दगी का
परिवहन। शादी विवाह समारोह, ज्योनारों, गोठों व
बड़े खानपान के पश्चात जूठन के बाद पदार्थों का
सेवन, मृत्यु के पश्चात मृतक के कपड़ों, बिस्तरों का उपयोग।
सूर्य व चन्द्रग्रहणों के अवसर पर घरों के बाहर टोकरी में
रख गये अनाज जिसमें कोयला डाला जाता था को
उठाकर ले जाने का हाल मैंने स्वयं देखा है। नापका
चलन कम था यदि दुकानों से लेना होता, या अन्य खाद्य
पदार्थ खरीदना होता था तो हाथ दूर रखकर ऊपर से
ग्रहण करना होता था। डाक्टर वैद्य हालत देखकर ही
दवा देते थे। बाहर बैठना पड़ता था। छूत नहीं थी।
दुकान में घुसने, मंदिर प्रांगण में घुसने का तो प्रश्न
ही नहीं। नये कपड़ों के बजाय पुराने उपयोग में
लिये गये कपड़ों को पहनना पड़ता था। शिक्षा तो
कोसों दूर, स्कूल में प्रवेश निषेध। प्राथमिक स्थिति.

आंशिक रूप से कमजोर। बहुत पिछड़ा वर्ग, सेवक वर्ग, दस्तकार
कामगारों की स्थिति भी शैक्षणिक, सामाजिक व आर्थिक रूप से
अत्यन्त कमजोर व नाजुक। निपुणता व कुशलता व व्यक्तिगत सेवा
के बावजूद सामाजिक रूप से पिछड़े व नीचे। ब्राह्मण, क्षत्रिय
वैश्य वर्ग के अलावा सभी की सामाजिक शैक्षणिक आर्थिक, राजनै
स्थिति आंशिक रूप से कमजोर व पिछड़ी। खाती, कुम्हार, नाई,
तेली, दर्जी, कुजड़ा, नीलगर रंगरेज, तमोली, धोबी, घोसी, सभी
दोयम दर्जे के नागरिक। ऊंचनीच को कायम रखने व व्यवहार में
लाने के लिए मुहावरे व कहावत। मंदिरों की सेवा, पुजारियों की सेवा
व हाकिमों की सेवा तक ही सीमित रह जाते थे। बहुत कम बच्चे
स्कूलों में जाते थे। जोशी के यहां पढ़ाई के पश्चात कम संख्या में
सरकारी स्कूलों में।

हम लोग ऊंच वर्गों की बस्तियों में रहते थे। पिताजी
की प्रतिष्ठा के अनुकूल बड़जाई स्कूल में अन्य छात्रों से अल
मैंने जोशी के यहां हिन्दी, अर्थमैटिक (गणित) के पश्चात
माध्यमिक स्कूल में प्रवेश लिया।

मेरी माताजी अत्यन्त धार्मिक महिला थी। रामायण
पाठ, सुन्दरकाण्ड पाठ व अन्य धार्मिक उत्सव लगातार होते
रहते थे। हम सब लोग उसमें भाग लेते थे। धार्मिक धार्मि
पुस्तकों को पढ़ने में भाग लेते थे। कथा में एक स्थान पर
आया "हरिजन जाति प्रीति प्रतिवादी"। हमें बताया गया था
हरिजन का मतलब जिसको हरि प्रिय हो या जो हरि का प्रि
हो। भगवान के आश्रित भगवान में विश्वास रखने वाले भगवान
का आदमी।

आजादी के बाद महात्मा गांधी ने भी ~~[illegible]~~
प्रयोग इसी पूर्व में किया। शिड्यूल्ड कास्ट के स्थान

लोग हरिजन शब्द का प्रयोग करते थे। अति सूचक
शब्दों का भी प्रयोग बहुत कम होता था। हाबा स्कूल
जिसमें मैं पढ़ता था, हमारे प्रधानाध्यापक पंडित जी ने
स्कालरशिप आदि के सम्बन्ध में जानकारी लेने हेतु
पूछा। प्राय लोगों में हरिजन कौन है हाथ उठाओ।
मैंने हाथ उठा दिया। (घर में प्रचलित, प्रतिदिन
उच्चारित होने वाले शब्द को ध्यान में रखकर)
पंडित जी ने बुलाकर थप्पड़ मारा और कहा पिताजी को
शिकायत करूंगा। घर आकर पूछा तो बताया गया
अब हरिजन का मतलब अछूत से है। मन में बहुत
ग्लानि हुई हरिजन और अछूत कैसे हुआ।

उन दिनों बड़े भाई राधामोहन जी व
हरिजन सेवक संघ के मंत्री श्री मोहनलाल प्रसाद
इन लोगों की बदतर स्थिति को सुधारने व
शिक्षा का प्रसार करने, साफ सुथरा रहने,
शराब नहीं पीने आदि के सम्बन्ध में चर्चा
करते रहते थे, प्रोग्राम बनाते रहते थे, कुछ न कुछ
करते रहते थे। चांदपोल में एक दफ्तर बनाया
गया उसमें बैठक होती थी। राधामोहन जी पक्के
धार्मिक व्यक्ति थे परन्तु सामाजिक बुराईयों
व ऊंचनीच के विरुद्ध रहते थे।

5 एकबार वे एक राज्यसभा के उपमंत्री
को गोविन्ददेव जी मंदिर में ले गये। दर्शन करवाये
लौटते वक्त मंत्री जी के जाने के पश्चात कुछ
लोगों ने उनके मुंह पर कालिख पोत दिया जब उन्होंने
पूछा तो कहा मेहतर को मंदिर में ले गये। जब

उन्होंने कहा कि वे मेहता नहीं महेश्वरी हैं तब लोग शांत हुए। मैंने देखा है जो रेस्टोरेन्ट बाल्मिकि लोग चलाते थे उसमें कोई सवर्ण अथवा पिछड़ा उच्चवर्णों का आदमी चाय पीने नहीं जाता था। सवर्णों द्वारा संचालित रेस्टोरेन्ट या चाय की दुकान में बाल्मिकि स्वयं अपना टूटा कप या गिलास जो वह दुकान के पास ही रखता जाता था उसमें सड़क व पटरी या जमीन पर बैठकर कप से चाय [illegible] पीता था। सार्वजनिक प्याऊ या सीधे पानी नहीं पी सकता था। एक अलग काठ या लोहे की नाली होती थी जिसमें प्याऊ चलाने वाला व्यक्ति पानी डालता था और काठ या लोहे की नली से बाहर आने वाले पानी को हथेली में या बर्तन में पानी लेकर पीना होता था। दुकान या सार्वजनिक स्थान, मंदिर, रेस्टोरेन्ट में प्रवेश वर्जित थी।

मेरे पर इसका गहरा प्रभाव पड़ा। स्कूल व मोहल्ले में खेलकूद में भी मेरे प्रतिष्ठित अन्य बच्चों के साथ इस प्रकार का व्यवहार मैंने बालकों द्वारा (दोनों द्वारा) होते भी देखा है।

चौकड़ी तोपखाने में पिताजी के रहते व आसपास के सभी मौहल्लों का बड़ा क्लब "महावीर क्लब" बना जिसमें खेलकूद, कुश्ती, सांस्कृतिक कार्यक्रम, संगोष्ठी, विचार गोष्ठियां होती थी। राधामोहन को उसका अध्यक्ष, उनकी संगठनात्मक शक्ति व प्रतिभा को देखते हुए, चुना गया। मुझे याद है एक पिताजी के नजदीकी वकील जो सवर्ण जाति के थे ने अपने साथियों से कहा था क्या हम में कोई

काबिल व्यक्ति नहीं है। एक सिकदारजी का व्यक्तित्व
हमारा प्रकाशस्तंभ था।

उस समय जयपुर में हमारा समाज (माली समाज)
की शैक्षणिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक
स्थिति तुलनात्मक कमजोर थी। फूलों का काम करने
वाले पंडितों व ब्राह्मणों के सम्पर्क में रहते थे
उनके इशारों पर चलते थे। साग सब्जी, फल
बेचने वाले वे इस समाज के नजदीकी व
प्रभावित।

माली समाज कभी Aggressive नहीं रहा।
धार्मिक आस्था, पुरानी परम्परागत व रूढ़ीवादी
विचारधारा, सन्तोषी, सीधा-सादा समाज।
कानून व व्यवस्था के विरुद्ध जाना, अपराध
करना, अन्य किसी की जमीन जायदाद हड़पना
प्रतिकार करना आदि से दूर। आर्थिक स्थिति
यह थी कि वे फौजदारी, अपराध, दुर्व्यवहार
को सहन कर लेते थे। जयपुर में कोई ऊंच
पद पर नहीं था। केवल हनुमानबक्स जी वकील थे,
मास्टर थे, परन्तु इंजीनियर डाक्टर सरकारी
अधिकारी नहीं थे। कम्पाउण्डर/वार्डब्वाय/चपरासी, बाबू बनना
ही बड़ी बात थी। जयपुर के बाहर की पूरी
जमीनें माली समाज की थी जहां साग सब्जी, फल-
फूल पैदा होते थे। सरकार ने सेठ साहूकारों व सम्पत्ति
कब्जाधारियों ने डरा धमकाकर मौखिक खरीदगी व
प्रवाह कर ली, हथिया ली या कौड़ियों में खरीदली।
आज उनके हालात यह है कि स्वयं के घर के लिए

जमीनों को त्रास रहे हैं। जयपुर के माली समाज में सामाजिकता, आपसी प्रेम भाव, भाईचारा, अपनत्व की कमी रही और इसका खामियाजा आज तक उठा रहे हैं। एक कहावत थी माली और मूला दीदा ही भला" / समाज के लोगों को पद प्रतिष्ठा, पावर, पैसा नहीं मिल सका इसलिए आपस में छोटी छोटी बातों पर अहम व विभाजन बना रहा। गुलामी की प्रवृत्ति बनी रही। राधामोहनजी जब चेयरमैन बने तो पार्षद माली समाज के थे, दोनों ही निकट के सम्बन्धी परन्तु उनका व्यवहार गुलाम वंश के शहजादे की तरह रहा और वे अपने आकाओं के जर खरीद गुलाम बने रहे और सेरस उनका विरोध किया। नवाई के विधान सभा चुनाव में यदि ये दोनों महानुभाव खिलाफत न अन्दरूनी Sabotage नहीं करते वे ने जयपुर से प्रथम विधानसभा सदस्य होते व राजनीति तक स्थिति बदल जाती। मुलायम भी रहे। एक बड़े नेता तो हमेशा कहते थे क्या यह समाज गाजर-मूली व प्याज बेचने व खानेवाला समाज ही बना रहेगा। क्यों नहीं राधामोहन जी प्रेरणा प्राप्त कर उनके ने तृत्व में आगे बढ़ा। राधामोहनजी में भी कभी जातियता की संकुचित भावना नहीं पैदा नहीं हुई वे भी सर्व समाज विशेषकर उच्च वर्ग के ही नेता रहे। उनको जातिवाद, संकुचित या हीन भावना कभी नहीं रही। नगर में बहुत कम लोग उन्हें माली समाज से हैं यह जानते थे।

मैं भी वाला स्कूल के बाद खण्डेलवाल वैश्य